भारत सरकार
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय
दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग
लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या - 3959
उत्तर देने की तारीख: 25.03.2025

राष्ट्रीय सुगम्य पुस्तकालय पहल

3959. श्री नवीन जिंदल:

क्या सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या राष्ट्रीय सुगम्य पुस्तकालय पहल के अंतर्गत पुस्तकालयों की संख्या बढ़ाने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) गत तीन वर्षों के दौरान ब्रेल लिपि सुगम्यता के लिए स्थापित या उन्नत किए गए पुस्तकालयों की राज्यवार कुल संख्या कितनी है;

(ग) क्या सरकार ने ब्रेल लिपि में पुस्तकों का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपाय किए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या ब्रेल उत्पादन पहल के अंतर्गत ब्रेल साहित्य की भाषायी सीमा का विस्तार करने के लिए कोई कदम उठाए गए हैं; और

(ङ) दृष्टिबाधित पाठकों के लिए ब्रेल पुस्तकालयों और बहुभाषी साहित्य के विस्तार हेतु समय-सीमा और भविष्य के लक्ष्य क्या हैं?

उत्तर
सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
(श्री बी.एल. वर्मा)

(क) : सरकार ने राष्ट्रीय सुगम्य पुस्तकालय पहल के अंतर्गत पुस्तकालयों की संख्या बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण उपाय कार्यान्वित किए हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि दृष्टिबाधित व्यक्तियों को विभिन्न सुगम्य प्रारूपों में शिक्षण सामग्री उपलब्ध हो सके। वर्तमान में, सुगम्य पुस्तकालय, जो सुगम्य पुस्तकों का एक डिजिटल संग्रह है, के साथ 16 पुस्तकालय पैनलबद्ध हैं। राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान (एनआईईपीवीडी) ने प्रिंट दिव्यांगजनों के लिए इस ऑनलाइन संग्रह को सुविधाजनक बनाने के लिए डीएआईएसवाई फ़ोरम ऑफ़ इंडिया (डीएफआई) के साथ भागीदारी की है।

सुगम्यता को और बढ़ाने के लिए, एनआईईपीवीडी ने कई प्रमुख विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनमें वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी (कोटा, राजस्थान), सुभाष ओपन यूनिवर्सिटी (कोलकाता), उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी, और भारतीय अध्यापक शिक्षा संस्थान (आईआईटीई), अध्यापक शिक्षा विश्वविद्यालय गांधीनगर (गुजरात स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ टीचर एजुकेशन) शामिल हैं। इन भागीदारियों का उद्देश्य दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए अपने-अपने पुस्तकालयों में सुगम्य पुस्तक संग्रह विकसित करना है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी), नई दिल्ली के सहयोग से, एनआईईपीवीडी ने उत्तराखंड के देहरादून में पठन के लिए एक यूनिवर्सल डिज़ाइन सेंटर की स्थापना की है। यह केंद्र दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए सुगम्य प्रकाशनों के राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के व्यापक संग्रह को प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त, एनआईईपीवीडी ने दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए आईवीआर-आधारित श्रवण नामक ऑडियो लाइब्रेरी बनाने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली के साथ भागीदारी की है।

जागरूकता बढ़ाने और सुगम्य पुस्तकालयों की संख्या बढ़ाने के लिए, एनआईईपीवीडी देहरादून नियमित रूप से सरकारी, अर्ध-सरकारी, कॉलेज, विश्वविद्यालय और गैर सरकारी हितधारकों को शामिल करके संगोष्ठी (सेमिनार) और सम्मेलन आयोजित करता है। ये निरंतर प्रयास भारत भर में दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए साहित्य और शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच में सुधार के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

(ख): राष्ट्रीय सुगम्य पुस्तकालय (एनएएल) पूरे भारत में, संस्थागत सदस्यता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे समावेशी पठन संसाधनों तक पहुंच बढ़ती है। पिछले 3 वर्षों के दौरान, संस्थागत सदस्यता की संख्या 18 तक पहुंच गई है, जिसमें निम्नलिखित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं: (पश्चिम बंगाल-07, महाराष्ट्र-03, उत्तर प्रदेश-01, मिजोरम-01, पंजाब-01, हरियाणा-01, केरल-02, उत्तराखंड-01 और जम्मू कश्मीर-01)।

(ग), (घ) और (ङ): सरकार देश भर में फैली 25 कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से "सुगम्य शिक्षण सामग्री के विकास के लिए वित्तीय सहायता पर परियोजना (डीएएलएम; पूर्व में ब्रेल प्रेस परियोजना)" के अंतर्गत ब्रेल पाठ्य-पुस्तकें और ब्रेल प्रारूप और अन्य सुगम्य प्रारूपों (ई-पब, टॉकिंग बुक, लार्ज प्रिंट) में शैक्षिक सामग्री निःशुल्क उपलब्ध करा रही है। 2014 से अब तक डीएएलएम परियोजना के अंतर्गत 13,68,01,098 ब्रेल पृष्ठों को उभारकर दृष्टिबाधित छात्रों को वितरित किया जा चुका है।

इसके अलावा, ब्रेल साहित्य की भाषाई सीमा का विस्तार करने के लिए, एनआईईपीवीडी, देहरादून के सहयोग से 13 भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड के साथ मैप किए गए मानक भारती ब्रेल कोड 4 जनवरी 2025 को प्रकाशित किए गए हैं।

सरकार निम्नलिखित पहलों के माध्यम से दृष्टिबाधित पाठकों के लिए ब्रेल पुस्तकालयों और बहुभाषी साहित्य के विस्तार पर सक्रिय रूप से काम कर रही है:

- राष्ट्रीय सुगम्य पुस्तकालय पहल के अंतर्गत डिजिटल रूप से सुगम्य पुस्तकालयों की संख्या में वृद्धि करना।
- विभिन्न भारतीय भाषाओं में ब्रेल और अन्य सुगम्य प्रारूपों में पुस्तकों की उपलब्धता बढ़ाना।
- सुगम्य साहित्य के दायरे का विस्तार करने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी), सुगम्य पुस्तकालय और डेज़ी फोरम ऑफ इंडिया जैसे संगठनों के साथ भागीदारी को मजबूत करना।

*****